Page No.:
Date:

HISTORY (H)
B.A. – IIIrd. PART - 'D'
PAPER – Vth.
HISTORY OF INDIA (1550 – 1750)
UNIT – Vth. Urban centres.
c. Urban Social structure.

⇒ नागरिक समाज:

मैक्स वेबर का अर्थ है कि गैर पश्चिमी शहरों में नागरिक समाज, नगरपालिका, प्रशासनिक परिषद, पार्षद महापौर आदि, का पूर्ण अभाव था और न ही सामाजिक समूहों के बीन वर्ग चेतना विद्यमान थी। नागरिकों का कोई निगमित निकाय भी मौजूद नहीं था, राज्य की सत्ता के बावजूद शहर के व्यापारियों और कारीगरों के लिए कोई स्वतंत्र कानूनी या न्यायिक संस्था नहीं थी।

पश्चिमी (यूरोपीय) शहर पारिवारिक वंशवाद के साथ श्रेणियों और विरादरी से घिरे हुए थे। शहरी जीवन के इस बहुलवादी ढांचे की तथाकथित बदलती तस्वीर शायद अपने गैर-पश्चिमी समकक्षों से कुछ ज्यादा अलग नहीं थी।

Scanned with CamScanner

हालांकि स्रोत यह इंगित करते हैं कि मध्य-काल में नागरिक समाज की उपस्थिति थी। अहमदाबाद मुहल्लों का पता करते थे जो प्रतोली (फाटक) द्वारा सुरक्षित होते थे जबकि इस्लामी प्रभाव के कारण इन्हें मोहल्ला के रूप में जाना जाने लगा जो बंद फाटकों से सुरक्षित होते थे। शहर का कोतवाल एक राजकीय अधिकारी होता था।

हर नगर, कस्बा और गाँव में कोतवाल का हर इलाके (मोहल्ले) में स्थित घरों के निवासियों का विवरण लिखना पड़ता था। सड़कों की रख-रखाव तथा के लिए सड़क अधिकारी की नियुक्ति की जाती थी।

2) शहर और अंतर-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य :-

मध्यकालीन शहर महानगरीय संस्कृतियों के जीवंत केंद्र थे। शहरों के बाहरी इलाकों में स्थित सूफी खानकाह सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण केंद्र थे। महरौली की सभी सूफी खानकाहें हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के लिए समान

Scanned with CamScanner

रूप से पवित्र थी। इसी प्रकार दिल्ली में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह अजमेर में शेख मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और गुलबर्गा में गेसू दराज की दरगाह दोनों ही समुदायों के मध्य पूजनीय थी।

हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों समान भाव से हिन्दू त्यौहार दीपावली मनाया करते थे। दिल्ली में बसंत पंचमी उत्सव पैगम्बर के पदचिन्ह से शुरू होता था और दोनों समुदायों के लोग इसमें सम्मिलित होते थे।

कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि त्यौहार आम विरासत का एक हिस्सा थे। मुगल चित्रों से यह प्रतीत होता है कि होली, राखी, दशहरा, दीपावली और ईद सभी त्यौहार शाही दरबार में समान उत्साह के साथ मनाए जाते थे। यहाँ तक कि शिवरात्रि के अवसर पर अकबर और जहाँगीर दोनों ही विशाल प्रीतिभोज का आयोजन करते थे तथा इस अवसर पर योगियों को बड़ी संख्या में आमंत्रित करते थे। वर्नियर के अनुसार शहर

के बाजार 'तमाशा' दिखाने वाले बाजीगरों और ज्योतिषियों से भरे थे।

शिक्षा भी प्रतिबंधित सीमाओं से परे प्रतीत होते हैं। ऐसा नहीं था कि केवल मुसलमानों को ही पढ़ने-लिखने के लिए मकतब में शामिल किया जाता था। शाहजहाँ के शासन काल में मशहूर मुंशी बालकृष्ण ब्राह्मण को हिसार के अरबुद अब्दुल हमीद के मकतब में भेजा गया था। वहाँ से इन्हें गणित और लेखाशास्त्र के अध्ययन के लिए दफ्तर खाना (लेखा कार का कार्यालय) भेजा गया जिसे उसने पसंद नहीं किया और बाद में वे शेख जलाल हिसारी के पास गये और वहाँ उनके नेतृत्व के फारसी गद्य और नीति शास्त्र में निपुणता प्राप्त की।

To be continue—

DR. UDAY KUMAR
DR. L.K.V.D. College Tajpur